टाइम्स एण्ड स्पेस

दैनिक समाचार पत्र

वर्ष - 01 अंक- 160 | कानपुर रविवार 11 अगस्त 2024 | पृष्ठ - 4 | मूल्य : 1 रुपये

1987 बैच के आईएएस अफसर टीवी सोमनाथन होंगे नए कैबिनेट सचिव

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने वित्त सचिव टीवी सोमनाथन को 30 अगस्त से 2 साल के लिए कैबिनेट सचिव नियुक्त किया है। वे 1982 बैच के आईएएस अधिकारी राजीव गौबा का स्थान लेंगे। सरकार की ओर से शनिवार को जारी आधिकारिक बयान में कहा गया है कि मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने टीवी सोमनाथन, आईएएस (टीएन:87) की कैबिनेट सचिवालय में विशेष कार्य अधिकारी के रूप में नियुक्ति को भी मंजूरी दे दी है, जो कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से लेकर कैबिनेट सचिव का पदभार ग्रहण करने तक लागू रहेगा। तमिलनाडु कैडर के 1987 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के वरिष्ठ अधिकारी टीवी सोमनाथन को अप्रैल 2021 में वित्त सचिव नियुक्त किया गया था। इससे पहले 2015 से 2017 के बीच कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय (एमओसीए) में संयुक्त सचिव रहे सोमनाथन प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) में आर्थिक नीतियों के क्रियान्वयन की देखरेख कर रहे थे।

प्रधानमंत्री ने केरल सरकार को राहत प्रयासों में हर संभव सहायता का आश्वासन दिया

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को केरल सरकार को राहत प्रयासों में हर संभव सहायता का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि हमारी प्रार्थनाएं वायनाड में भूस्खलन से प्रभावित लोगों के साथ हैं। इससे पहले उन्होंने भूस्खलन से प्रभावित केरल के वायनाड का दौरा किया और आपदा प्रभावितों से मुलाकात की। प्रधानमंत्री ने कहा कि जब से मुझे इस घटना के बारे में पता चला है, तब से मैं भूस्खलन के बारे में जानकारी ले रहा हूं। केंद्र सरकार की सभी एजेंसियां जो इस आपदा में मदद कर सकती थीं, तुरंत काम पर लग गईं। उन्होंने कहा कि यह आपदा सामान्य नहीं है। हजारों परिवारों के सपने चकनाचूर हो गए हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने स्वयं मौके पर जाकर स्थिति देखी है। राहत शिविरों में पीड़ितों से मुलाकात की। मैंने अस्पताल में घायल मरीजों से भी मुलाकात की।

कठुआ हमले में शामिल चार आतंकवादियों के स्केच जारी,प्रत्येक पर पांच लाख का इनाम

जम्मू। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने कठुआ हमले में शामिल चार आतंकवादियों के स्केच जारी किए हैं। साथ ही प्रत्येक आतंकवादी पर पांच लाख रुपये का इनाम घोषित किया गया है। चारों को आखिरी बार कठुआ जिले के मल्हार, बानी और सियोजधार के ढोकों में देखा गया था। यह जानकारी कठुआ पुलिस चौकी ने एक्स पर साझा की है। इसमें कहा गया है कि ठोस सूचना देने वाला व्यक्ति इस इनाम का हकदार होगा। आतंकवादियों की विश्वसनीय सूचना देने वाले को भी उचित इनाम दिया जाएगा।

हेमंत सोरेन सरकार से युवा निराश, झारखंड में घटी है हिंदुओं की जनसंख्या-हिमंत विस्वा सरमा

रांची। असम सरकार के मुख्यमंत्री एवं विधानसभा चुनाव के भाजपा के सह प्रभारी हिमंत विश्व सरमा ने कहा कि हेमंत सोरेन सरकार से राज्य के युवा निराश हैं। वे विधानसभा चुनाव में उनके खिलाफ वोट कर नाराजगी जाहिर करेंगे। बांग्लादेश के हालात पर उन्होंने कहा कि जिस तरह वहां हिंदुओं पर हमले हो रहे हैं, वैसी ही परिस्थितियां भारत के झारखंड, असम और पश्चिम बंगाल के कई जिलों में हैं। यहां हिंदुओं की जनसंख्या घटी है। असम में हिंदू जनसंख्या में 10 फीसदी जबकि बांग्लादेश में 13 प्रतिशत की कमी आयी है।

हिमंत ने कहा कि इतना झूठ बोलने वाला मुख्यमंत्री कहीं नहीं है। ऐसा लगता है हेमंत सोरेन रात को सपना देखते हैं और सुबह में वादा कर देते हैं लेकिन जनता जानना चाहती है कि हेमंत सोरेन सच कब बोलते हैं। असम के मुख्यमंत्री राजधानी रांची के कार्निवाल बैंक्वेट हॉल में शनिवार को भाजपा मोर्चा के तत्वावधान में युवा आक्रोश रैली योजना सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। इसमें 23अगस्त को होने वाले रैली की तैयारी पर विस्तृत चर्चा की गई।

हेमंत सोरेन न वादा निभाते हैं न जनता से माफी मांगते हैं

हेमंत विस्वा सरमा ने कहा कि हेमंत सोरेन न वादा निभाते हैं न जनता से माफी मांगते हैं। मुख्यमंत्री का बोलने का तरीका डेमोक्रेटिक नहीं है।

जनता को धोखा भी दे रहे और पांच लाख नौकरी, बेरोजगारी भत्ता, बांग्लादेशी घुसपैठ पर बोलने को तैयार नहीं। ऐसी सरकार यदि आगे चली तो राज्य के युवाओं का कोई भविष्य नहीं बचेगा।

उन्होंने कहा कि मइयां योजना भी धोखा है। दो महीने तक दो हजार देने की बात कर रहे लेकिन बेटी बहनों को दलाल बिचौलिए फार्म भरने में ही एक हजार लूट ले रहे। हेमंत सरकार को कंप्यूटर ने भी रिजेक्ट कर दिया है। उन्होंने कहा कि राज्य की माताओं बहनों को दो हजार रुपये, नहीं बल्कि भाई और बेटे को नौकरी चाहिए। हेमंत सोरेन के पास राज्य के बेरोजगार युवाओं का पिछले 60 महीना का तीन लाख बकाया है।

हेमंत सोरेन को सन्यास दिलाने के लिए युवा संकल्पित-बाबूलाल मरांडी

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि आज राज्य में आम जनता परेशान है। कानून व्यवस्था ध्वस्त है। राज्य के युवाओं को ठगा। किसानों को ठगा।बहन-बेटियों की इज्जत लुटवाई। जल जंगल जमीन को लूटा और लुटवाया। ऐसी सरकार को राज्य हित में एक क्षण भी बने रहने का अधिकार नहीं है। उन्होंने कहा कि पांच साल में विकास का एक उदाहरण भी हेमंत सरकार नहीं दे सकती। अब जनता का भरोसा इस सरकार से उठ चुका है। उन्होंने कहा कि हेमंत सरकार के झूठ को चौक चौराहों पर बार बार दोहराएं। उन्होंने कहा कि ये सरकार मोदी सरकार की नकल करने को चली वह भी नहीं कर सकी। जनता को ग्रीन कार्ड से राशन देने की बात की लेकिन एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकी। जल जीवन मिशन भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गया। युवा शक्ति आज कमर कसकर राज्य सरकार के खिलाफ खड़ी है। हेमंत सोरेन अब खुद संन्यास नहीं ले रहे तो हमें 23 अगस्त को युवा शक्ति उन्हें सन्यास लेने केलिए बाध्य कर देगी।

तिरंगे को लेकर फिर कांग्रेस ने फैलाया झूठ

नई दिल्ली। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव जयराम रमेश ने तिरंगा फहराने को लेकर एक बार फिर भ्रम फैलाने का प्रयास किया। जयराम रमेश ने एक बड़ा ट्वीट कर दावा किया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हमेशा से राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा का विरोधी रहा है और वह इसे फहराता नहीं था। इस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए राज्यसभा के पूर्व सांसद एवं संघ के जानकार प्रो. राकेश सिन्हा का कहना है कि कांग्रेस आजकल हर विषय पर सोशल मीडिया में झूठ फैलाने प्रयास करती रहती है। संघ हमेशा से इस देश से, इस देश के मानबिन्दुओं से प्यार करता है और उसका सम्मान करता है। तिरंगा ध्वज हमारे लिए देश की पहचान है और हम उसे गर्व के साथ फहराते हैं। प्रो. राकेश सिन्हा ने कहा कि, ''संघ राष्ट्रीय जीवन से जुड़े सभी पक्षों के प्रति समर्पित है । 1930 में लाहौर में कांग्रेस के पूर्ण स्वराज के प्रस्ताव के बाद संघ ने सभी शाखाओं में ध्वज का पूजन किया गया। संघ पर आरोप वही लगा रहे हैं जो टुकड़े टुकड़े गैंग का हिस्सा हैं या उन्हें इतिहास बोध नहीं है । राष्ट्रीय संकेतों का राजनीतिकरण करना अपने आप में अपराध है ।''

गलत संदर्भ, आधी बात

जयराम रमेश ने संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर (श्रीगुरुजी) की चर्चित पुस्तक बंच ऑफ थाट्स और 2015 में संघ के एक पदाधिकारी के इंटरव्यू के आधे-अधूरे अंश को साझा करते हुए यह दावा किया था कि संघ तिरंगे की जगह केसरिया ध्वज को मान्यता देता रहा है, इसलिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का हर घर तिरंगा अभियान एक छलावा है। जबकि जिन दो संदर्भों की चर्चा जयराम रमेश ने की है, उसे पूरा देखने पर साफ हुआ कि वहां आजादी से पहले झंडा कमेटी के प्रस्ताव की चर्चा है। जबकि संघ के अ.भा.प्रचार प्रमुख रहे डॉ. मनमोहन वैद्य के जिस साक्षात्कार की चर्चा है उसमें उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा है कि संघ संविधान और तिरंगे का पूरा सम्मान करता है और उसकी रक्षा के लिए संघ के स्वयंसेवकों ने अपने प्राणों तक की बाजी लगा दी थी, हमने तिरंगे की रक्षा के लिए कश्मीर से कन्याकुमारी तक बलिदान दिया है।

आजादी के तुरंत बाद कश्मीर में एक निशान-एक विधान-एक प्रधान के नारे के साथ आंदोलन चलाना तिरंगे का सम्मान ही तो था। गोवा मुक्ति आंदोलन में भी संघ के स्वयंसेवक तिरंगा हाथों में लेकर आगे बढ़े थे।संघ के जानकार का कहना है कि यह कांग्रेस ही है जिसने लोगों की आन-बान-शान के प्रतीक तिरंगे से सामान्य लोगों को दूर रखा। तिरंगा केवल गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस पर स्कूलों, कालेजों और सरकारी कार्यालयों पर ही फहराने का प्रावधान था।

तिरंगा फहराने का इतिहास

प्रसिद्ध उद्योगपति और राजनेता नवीन जिंदल ने सुप्रीम कोर्ट में इस मामले को उठाया, उसके बाद 1995 से आम नागरिकों को अपने घरों और संस्थानों में तिरंगा फहराने की छूट मिली। तबसे लगातार स्वतंत्रता दिवस के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्यालय में तिरंगा फहराया जाता है और संघ प्रमुख देश में जहां कहीं भी हों, वहां समारोहपूर्वक तिरंगा फहराते हैं। संघ के जानकारों का कहना है कि कांग्रेस देश की आजादी से लेकर स्वतंत्रता के लिए बलिदान देने वालों को लेकर लगातार झूठ बोलती रही है और पूरे आंदोलन का श्रेय खुद लेना चाहती है। अब उसके एक एक झूठ की पोल खुल रही है, इसलिए वह बेचैन है। प्रधानमंत्री मोदी की अनूठी पहल- हर घर तिरंगा ने देश में एक नया उत्साह पैदा किया है। वर्ष 2022 से शुरू किए गए इस अभियान ने एक बड़ा परिवर्तन किया है। अब लोग 9 अगस्त से 15 अगस्त तक अपने घरों की छत पर तिरंगा फहराते हैं। कांग्रेस को लगता है कि इससे आजादी के आंदोलन में उसकी सर्वोच्चता की कलई खुल रही है, इसीलिए वह तरह-तरह के झूठ फैलाने की नाकाम कोशिश करती रहती है।

देश की आजादी की लड़ाई में गुजरात का बड़ा योगदान-जेपी नड्डा

राजकोट। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने शनिवार को गुजरात के राजकोट के रेसकोर्स मैदान से 'हर घर तिरंगा' अभियान की शुरुआत की। इस मौके पर जलशक्ति मंत्री सीआर पाटिल और राज्य के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल की मौजूदगी में तिरंगा यात्रा शुरू हुई। तिरंगा यात्रा में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए।

इस मौके पर जेपी नड्डा ने कहा कि आजादी की लड़ाई में गुजरात का बड़ा योगदान रहा है। महात्मा गांधी और सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। प्रधामंत्री नरेन्द्र मोदी ने आजादी के अमृतकाल में देश को वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने का स्वप्न देखा है, जिसे साकार करने का प्रण लिया है। उन्होंने युवाओं से अपील की है कि हमें आजादी सरलता से नहीं मिली है। हजारों वीर-शहीदों ने बलिदान दिया है और लाखों परिवार ने अपने सुख-चैन को त्याग कर दिन-रात देखे बिना मां भारती की आजादी के लिए संघर्ष किया है। इन महापुरुषों और आजादी के संघर्ष का इतिहास हमें याद रखना चाहिए। 9 अगस्त को महात्मा गांधी के अंग्रेजों हिंद छोड़ो का आह्वान का जिक्र करते हुए नड्डा ने कहा कि यह आंदोलन जन-जन की आवाज बन गई थी। सभा को मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल, राजकोट की मेयर नयनाबेन पेढडीया समेत अन्य लोगों ने संबोधित किया। यात्रा का जगह-जगह गीत-संगीत, परंपरागत नृत्यों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ स्वागत किया गया। लोगों ने पुष्प वर्षा कर तिरंगा यात्रा का स्वागत किया। इस अवसर पर कणबी रास, मांडवी, मणियारो रास, बेडा नृत्य, पांचाल का डोका रास, नलकांठा का पढारो का मंजीरा

प्रधानमंत्री मोदी, राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे ने दी मुख्यमंत्री हेमंत को जन्मदिन की शुभकामनाएं

रांची। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को उनके जन्मदिन की शुभकामनाएं दी है। साथ ही उन्होंने वंचितों और सामाजिक न्याय के लिए लड़ने की बात कही है। साथ ही जन्मदिन की बधाई भी दी है।

झामुमो के कार्यकारी अध्यक्ष और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शनिवार को 49वां जन्मदिन मनाया है। इस मौके पर प्रधानमंत्री मोदी ने भी मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए उनकी लंबी उम्र और बेहतर स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की है।राहुल गांधी ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए लिखा कि झारखंड के मुख्यमंत्री को जन्मदिन की शुभकामनाएं। विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' (इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस) गरीबों, वंचितों एवं आदिवासियों के हक की लड़ाई लड़ेगा और जीतेगा। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने उन्हें बधाई देते हुए लिखा कि हम उनकी लंबी उम्र और अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते हैं। 'इंडिया' गठबंधन देश में सामाजिक न्याय, आर्थिक सशक्तिकरण और समावेशी

कानून और स्वास्थ्य सेवाओं का लक्ष्य समाज की बेहतरी-सीजेआई

चंडीगढ़। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस डी.वाई. चंद्रचूड़ ने कहा कि कानून और स्वास्थ्य सेवाओं का एक ही लक्ष्य होता है। दोनों समाज की बेहतरी के लिए काम करते हैं। जिस प्रकार हम गवाह और सबूतों के आधार पर किसी भी मामले की सुनवाई करते हैं, इसी प्रकार डॉक्टर भी मरीज की जांच रिपोर्ट और उसके लक्षणों के आधार पर उसका इलाज करते हैं।

चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ शनिवार को पीजीआई चंडीगढ़ में आयोजित दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि भाग ले रहे थे। उन्होंने यहां पर 80 डॉक्टरों को मेडल देकर सम्मानित किया और 508 डॉक्टरों को डिग्री प्रदान की है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए चीफ जस्टिस ने कहा कि चंडीगढ़ एक अर्बन प्लानिंग का बेहतरीन हिस्सा है। यहां पर कैपिटल कॉम्प्लेक्स, पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट, सुखना लेक इसके अच्छे उदाहरण हैं। उन्होंने बताया कि 2021 में वह अपने परिवार के साथ शिमला घूमने जा रहे थे, तभी उनकी बेटी प्रियंका को सांस लेने में तकलीफ हो गई थी। इसके बाद उसे इसी अस्पताल में दाखिल कराया गया था। जहां पर उसका 6 हफ्ते तक इलाज चला। जिसके बाद वह ठीक होकर लौटी थी।पीजीआई में पहुंचने से पहले उन्होंने पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट में एक नेशनल कांफ्रेंस का उद्घाटन किया। यह नेशनल कांफ्रेंस अदालत में टेक्नोलॉजी के उपयोग पर रखी गई है। जिसमें देश के विभिन्न राज्यों से जज यहां पर पहुंचे हुए हैं।इस मौके पर चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि टेक्नोलॉजी के माध्यम से न्यायपालिका को आम नागरिकों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान होगा। टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल न्याय सबके द्वार सुनिश्चित करने के लिए किया जाना चाहिए। ई-कोर्ट का तीसरा चरण शुरू होने वाला है। केंद्र सरकार की तरफ से इसके लिए 7000 करोड़ रुपए का बजट भी दे दिया गया है। बुनियादी ढांचा बढ़ाया जाना जरूरी है। अदालतों में पेंडिंग केसों का कारण है कि अदालतों में लोगों का विश्वास बढ़ रहा है। नए माध्यमों को अपनाना होगा। सुप्रीम कोर्ट में भी लोक अदालतों का आयोजन शुरू किया गया है। जिसके माध्यम से पांच दिनों में एक हजार केसों का निपटारा किया गया है। उन्होंने कहा कि गर्मी की छुट्टियों के दौरान जून माह में पहली बार 21 बैंचों ने काम किया है। जिसके चलते चार हजार केसों की सुनवाई की गई और 1170 केसों का निपटारा किया गया।चीफ जस्टिस ने कहा कि देश की जनता को उनकी भाषा में शीघ्र व सरल न्याय मिले इसके लिए एआई की भूमिका लगातार बढ़ती जा रही है। उन्होंने बताया कि सुप्रीम कोर्ट की भाषा अंग्रेजी है।

न्याय व्यवस्था से नागरिकों के मौलिक कर्तव्य बरकरार-उपराष्ट्रपति

जोधपुर। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि न्याय व्यवस्था ने ही देश के नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों को बरकरार रखा हुआ है। वे शनिवार को यहां बार काउंसिल ऑफ राजस्थान की ओर से राजस्थान हाई कोर्ट के प्लेटिनम जुबली महोत्सव को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान रोल ऑफ ज्यूडिशरी इन इमर्जिंग इंडिया विषय पर सेमिनार का भी आयोजन किया गया।उपराष्ट्रपति धनखड़ ने सभी को प्लेटिनियम जुबली की बधाई दी। उन्होंने अपने उद्बोधन में कई ऐसे केस व कोर्ट के फैसलों को जिक्र किया जिनके फैसलों से नागरिकों को मौलिक आजादी का फायदा मिल रहा है। उन्होंने न्याय प्रणाली को देश का मजबूत स्तम्भ बताया। उपराष्ट्रपति ने कहा कि मानव जीवन का सबसे अनमोल पहलू स्वतंत्रता है। लोग लोकतंत्र से प्यार करते हैं क्योंकि वे स्वतंत्रता को अपनी जीवनरेखा मानते हैं। कानून प्रजा के लिए या बाहर से काम करने वाली संप्रभु शक्ति के लिए नहीं हैं, बल्कि वे हमारे से हैं, हमारे लिए हैं और हमें उन्हें वास्तविकता में अनुवादित करना है।

कार्यक्रम में उपराष्ट्रपति के साथ सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश एजी मसीह, न्यायाधीश संदीप मेहता, राजस्थान हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश मनिन्द्र मोहन श्रीवास्तव, विधि मंत्री जोगाराम पटेल, बार काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष मनन कुमार मिश्रा और बार काउंसिल ऑफ राजस्थान के चेयरमैन भुवनेश शर्मा सहित कई पूर्व न्यायाधीश व अधिवक्ताओं ने भी शिरकत की। समारोह में राजस्थान हाई कोर्ट के वर्तमान एवं पूर्व न्यायाधीश, बार काउंसिल ऑफ राजस्थान के वर्तमान एवं पूर्व सदस्य, प्रदेश में स्थित बार संघों के पदाधिकारी एवं अधिवक्ताओं ने

सम्पादकीय

कहर की बरसात

सिसकियां पिछले साल की लौट आईं, बेरहम बरसात ने दरवाजे पे पुन- दस्तक दी। खत पुराने भी यही खबर देते रहे, लेकिन दिल्ली ने हमारी एक न सुनी। विध्वंस की परिक्रमा में पूरा हिमाचल, लेकिन शिमला, कुल्लू और मंडी में कहर की बरसात ने मौत का समुद्र बना दिया। आधा दर्जन बादलों का श्रृंखलाबद्ध होकर फटना, जिन घाटियों, नदी-नालों, घरों, सडक़ों, योजनाओं-परियोजनाओं और होटलों से होकर गुजरा है, वहां मौत और विनाश का मंजर देखा नहीं जाता। यहां समेज़ के अस्तित्व को मिटाने वाली बारिश, बागीपुल पर भारी पडऩे वाला पानी और मंडी के जलबहाव में घर-परिवार को मिटाती बाढ़ का रौद्र रूप बता रहा है कि फिलवक्त सारा हिमाचल चीख रहा है। बुधवार की रात से निकली वीरवार की चीख समेज़ के पत्थरों से लौट कर कानों में शीशा पिघला रही है। कल तक वहां आशियानें थे, आशाएं और बस्ती में मस्ती थी, लेकिन आज न घर बचे, न घर के लोग और न ही धरती का नामोनिशान रहा। करीब साढ़े तीन दर्जन लोगों को निगल कर बारिश सिर्फ छोड़ गई अफसोस, क्रूर यादें और वीभत्स दृश्य, जहां अब अवशेष रो रहे हैं, 'आखिर कहां गए लोग, क्यों गए लोग।' हादसों का प्रदेश बन गया हिमाचल, यहां बारिश अब मौत की सुपारी लेकर आती है। बागीपुल ने एक दर्जन लाशें देखीं, तो पद्धर के पत्थरों में लापता हो गए नौ से दस लोग। बादल हमारी योजनाओं, नीतियों और खुदगर्जी के भी फटे हैं। बादल हमें घूर रहे हैं, क्योंकि हम उसके आस्तीन के सांप हैं। उसके रास्तों के व्यवधान हैं।हम समेज़ की बस्ती में मौत का सामान हैं। हम तरक्कीपसंद हिमाचली नदी-नालों के आसपास विकास का जो मंजर खोज रहे हैं, उसमें कितनी कीलें और कितने विस्फोटक इरादे छुपे हैं कि आज हमारे अस्तित्व के निशान फनां हो रहे हैं। बरसात अब अस्तित्व से लड़ रही है, विकास से लड़ रही है। पंडोह बांध के गेट खोलते हैं, तो मंडी का पंचवक्त्र मंदिर बताता है कि डूबने को अब ईश्वर को भी कोई सहारा नहीं मिल रहा। पहाड़ पर पिछले साल भी कोहराम मचा था। नुकसान के अनुमान में आर्थिकी निकल गई और प्रदेश का वित्तीय घाटा बढ़ गया।

लेकिन केंद्र ने हमारी न फरियाद सुनी और न ही पर्वत को समझने की सुध ली। बादल समुद्र से उठते हैं, तो उनका कद और मद अलग होता है। मैदानों के ऊपर उनकी काया और छाया अलग होती है, लेकिन पहाड़ पर वे अपना ठौर, अपना सफर फूल कर जब वजनी होते हैं, तो बारिश का अंतिम चरित्र भयावह हो जाता है। ये जख्म बताते हैं कि बादलों में शैतान छुपा था, लेकिन खंजर में तेरा नाम खुदा था। ये खंजर केंद्र-राज्य की बीच फासलों का है। पहाड़ को न समझने की चुनौती को सभी नजरअंदाज कर रहे हैं। राज्य विनाश की लहरों को न मापने की गलती कर रहा है, तो केंद्र पहाड़ के आंसू पौंछने की मर्यादा भंग कर रहा है। हद तो यह कि बरसात को हिमाचल के महकमे ही हल्के से ले रहे हैं। नदी-नालों के किनारे बढ़ रहे हादसों के बावजूद निर्माण की कोई आचार संहिता लागू नहीं होती। वर्षों पहले से पहली जुलाई से 31 अगस्त तक स्कूली अवकाश निर्धारित थे, लेकिन शिक्षा विभाग का मुख्यालय अपने मौसम खुद तय करके बच्चों के स्कूल पहली अगस्त को खोल देता है। इसी पहली अगस्त की किस्त में डूबे स्कूल और ढहती इमारतें बता रही हैं कि महकमा कहीं बच्चों की जान से खेल रहा है।

एक बड़े जनजातीय नर संहार के स्मरण का शोक दिवस

प्रवीण गुगनानी

विदेशी शक्तियां भारतीय समाज को विखंडित करने हेतु मूलनिवासी दिवस का उपयोग कर रहीं हैं। नौ अगस्त, वस्तुत: पश्चिमी साम्राज्यवादियों द्वारा किये गए बड़े, बर्बर नरसंहार का दिन है। इस शोक दिवस को उसी पीड़ित व दमित जनजातीय समाज द्वारा उत्सव व गौरवदिवस रूप में मनवा लेने का षड्यंत्र है यह! आश्चर्य यह है कि पश्चिम जगत, झूठे विमर्श गढ़ लेने में माहिर छदम बुद्धिजिवियों के भरोसे जनजातीय नरसंहार के इस दिन को जनजातीय समाज द्वारा ही गौरवदिवस के रूप में मनवाने कुचक्र में सफल हो रहा है। वस्तुत: 9 अगस्त का यह दिन अमेरिका, जर्मनी, स्पेन सहित समस्त उन पश्चिमी देशों में वहां के बाहरी आक्रमणकारियों द्वारा पश्चाताप, दु:ख व क्षमाप्रार्थना का दिन होना चाहिए। इस दिन यूरोपियन आक्रमणकारियों को उन देशों के मूल निवासियों से क्षमा मांगनी चाहिए जिन मूलनिवासियों को उन्होंने बर्बरतापूर्वक नरसंहार करके उन्हें उनके मूलनिवास से खदेड़ दिया था और नगर छोड़कर सुदूर जंगलों में बसने को विवश कर दिया था। पश्चिमी बौद्धिक जगत का प्रताप देखिये कि हुआ ठीक इसका उल्टा; उन्होंने इस दिन का स्वरुप, मंतव्य व आशय समूचा ही उलटा कर दिया और आश्चर्य यह कि हम भारतीय भी इस थोथे विमर्श में फंस गए। इस इंडीजेनस डे का हमसे तो कोई सरोकार ही नहीं है। यदि जनजातीय दिवस मनाना ही है तो हमारे पास भगवान बिरसा मुंडा से लेकर टंट्या मामा भील तक हजारों ऐसे जनजातीय यौद्धाओं का समृद्ध इतिहास है जिन्होंने हमारे समूचे भारतीय समाज के लिए कई कई गौरवमई अभियान चलाये व भारतमाता को स्वतंत्र कराने हेतु अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया।

जनजातीय व वनवासी समाज की प्रतिष्ठा, उसके रक्षण व विकास की भारत में प्राचीन परंपरा रही है। प्रकृति पूजन हमें वेदों से प्राप्त हुआ जिसके प्रति नगरीय समाज की अपेक्षा जनजातीय समाज अधिक आग्रही रहा है। जनजातीय समाज रक्षण का पात्र नहीं अपितु शेष समाज का रक्षक भी रहा है यह तथ्य भी हमें प्राचीन भारतीय परम्पराओं व लेखन से मिलता है। मूल निवासी दिवस की चर्चा करें तो ध्यान आता है कि हमारी नर्मदा घाटी ही मानव प्रजाति की जन्मदाता रही है। नर्मदा किनारे जन्मी इस सभ्यता में नगरीय व वन कंदराओं में निवास करने वाले बंधू दोनों का ही अपना अपना महत्व व भूमिका थी। दोनों ही समाज अपने उत्पादनों व वृत्तियों के आधार पर परस्पर निर्भरता के सिद्धांत से जीवन यापन करते हुए वैदिक धर्म को ही भिन्न रूपों में माना करते थे।शिव उपासना वैदिक धर्म का एक अविभाज्य अंग रहा है जिसे वन कंदराओं में रहने वाले जनजातीय बंधुओं ने भी आगे बढ़ाया व नगरीय समाज ने भी। वेदों, शास्त्रों, शिलालेखों, जीवाश्मों, श्रुतियों, पृथ्वी के सरंचनात्मक विज्ञान, जेनेटिक अध्ययनों आदि के आधार पर जो तथ्य सामनें आते हैं उनके अनुसार पृथ्वी पर प्रथम जीव की उत्पत्ति गोंडवाना लैंड पर हुई थी जिसे तब पेंजिया कहा जाता था। पेंजिया गोंडवाना व लारेशिया को मिलाकर बना था। गोंडवाना लैंड के अमेरिका, अफ्रीका, अंटार्कटिका, आस्ट्रेलिया एवं भारतीय प्रायद्वीप में विखंडन के पश्चात यहां के निवासी अपने-अपने क्षेत्र में बंट गए थे। जीवन का विकास सर्वप्रथम भारतीय दक्षिण प्रायद्वीप में नर्मदा नदी के तट पर हुआ जो विश्व की प्राचीनतम नदी है।

मध्यप्रदेश के भीम बैठका में पाए गए पच्चीस हजार वर्ष पुराने शैलचित्र, नर्मदा घाटी में की गई खुदाई, तथा मेहरगढ़ के अलावा कुछ अन्य नृवंशीय एवं पुरातत्वीय प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि भारत भूमि, विश्व के प्राचीनतम आदिमानव की कर्मभूमि रही है। यही आदिमानव वैदिक या सनातन संस्कृति के जन्मदाता थे। डॉ. शशिकांत भट्ट की पुस्तक नर्मदा वैली = कल्चर एंड सिविलाइजेशन में, नर्मदा घाटी सभ्यता के विषय में में विस्तार से उल्लेख मिलता है। नर्मदा किनारे मानव खोपड़ी का पांच से छ: लाख वर्ष पुराना जीवाश्म मिला है जो सनातन धर्म के सर्वाधिक प्राचीन धर्म होने के अकाट्य प्रमाण को वैश्विक पटल रखता है। पौराणिक ग्रंथों में जिस रेवाखंडे शब्द का प्रयोग मिलता है नर्मदा संस्कृति की प्राचीनता को प्रकट करता है।इन सब तथ्यों के प्रकाश में यह प्रश्न उपजता है कि अंतत: यह मूलनिवासी दिवस मनाने का चलन उपजा क्यों व कहां से ? वस्तुत: यह मूलनिवासी दिवस पश्चिम के गोरों की देन है। कोलंबस दिवस के रूप में भी मनाये जाने वाले इस दिन को वस्तुत: अंग्रेजों के अपराध बोध को स्वीकार करनें के दिवस के रूप में मनाया जाता है। अमेरिका से वहां के मूल निवासियों को अतीव बर्बरता पूर्वक समाप्त कर देनें की कहानी के पश्चिमी पश्चाताप दिवस का नाम है मूल निवासी दिवस।

वस्तुत: इस मूलनिवासी फंडे पर आधारित यह नई विभाजनकारी रेखा एक नए षड्यंत्र के तहत भारत में लाई जा रही है जिससे भारत को सावधान रहनें की आवश्यकता है। आज भारत सामाजिक समरसता के नये आयाम गढ़ रहा है व अंग्रेजों व परिवर्तन कुछ भारत विरोधी तत्वों को रास नहीं आ रहा है। इस सकारात्मक परिवर्तन के वातावरण में जहर बोने का कार्य करते हैं कुछ भारत विरोधी व विभाजनकारी लोग। मूल निवासी दिवस के एजेंडे के पीछे बहुत से ऐसे विदेशी मानसिकता के लोग खड़े हो गयें हैं व भारत के भोले भाले जनजातीय समाज के मन में विभाजन के बीज बो रहें हैं।

इस पूरे मामले की जड़ बाबा साहब अम्बेडकर के धर्म परिवर्तन के समय दो धर्मों; इस्लाम एवं इसाईयत में उपजी निराशा में व कम्युनिस्टों की सोच में है। ईसाइयत व इस्लाम धर्म नहीं अपनानें को लेकर बाबा साहब के विचार सुस्पष्ट रहें हैं, उन्होंने सस्वर कहा व लिखा कि उनकें अनुयायी इस्लाम व ईसाइयत से दूर रहें। किंतु आज मूलनिवासी वाद के नाम पर भारत का दलित व जनजातीय समाज एक बड़े इसाई व इस्लामी षड्यंत्र का शिकार हो रहा है।एक बड़े और एकमुश्त धर्म परिवर्तन की आस में बैठे ईसाई धर्म प्रचारक तब बहुत ही निराश व हताश हो गए थे जब बाबासाहब अम्बेडकर ने किसी भारतीय भूमि पर जन्में व भारतीय दर्शन आधारित धर्म में जानें का निर्णय अपनें अनुयाइयों को दिया था। कम्युनिस्ट विचार व इसाई धर्म के इसी षड्यंत्र का अगला क्रम है मूलनिवासी वाद का जन्म! भारतीय दलितों व आदिवासियों को पश्चिमी अवधारणा से जोड़नें व भारतीय समाज में विभाजन के नए केंद्रों की खोज इस मूलनिवासी वाद के नाम पर प्रारंभ कर दी गई है। इस पश्चिमी षड्यंत्र के कुप्रभाव में आकर कुछ दलित व जनजातीय नेताओं ने यह कहना प्रारंभ किया कि भारत के मूल निवासियों (दलितों) को बाहरी आर्यों ने अपना गुलाम बनाकर यहां हिन्दू वर्ण व्यवस्था को लागू किया। बाबा साहेब अपने लेखन कथित आर्य व जनजातीय संघर्ष की बात को दृढ़ता से नकारते हैं। बाबासाहब ने लिखा है- आर्य आक्रमण की झूठी कथा पश्चिमी लेखकों द्वारा बनाई गई है जिसके कोई प्रमाण नहीं है। अम्बेडकर जी आगे लिखते हैं ङ्क इस पश्चिमी सिद्धांत का विश्लेषण करनें से मैं जिस निर्णय पर पहुंचा हूँ, वह यह है - वेदों में आर्य जातिवाद का उल्लेख नहीं है व वेदों में आर्यों द्वारा दलित व जनजातीय आक्रमण कर विजय प्राप्त करनें का कोई प्रमाण नहीं है।

ये कथित लोग कहते हैं कि वे मूलनिवासी हैं और बाकी सारे लोग विदेशी हैं। वस्तुत: सच्चाई यह है कि भारत में रह रहे सभी मूल भारतीय यहां के मूलनिवासी हैं।

वस्तुत: इस नए षड्यंत्र का सूत्रधार पश्चिमी पूंजीवाद है। अनावश्यक ही यह राग अलापा जाता रहा है कि आर्य बाहर से आये थे। इस भ्रामक अवधारणा ने भारतीय संस्कृति का बड़ा अहित किया है। भारतीय जनमानस में परस्पर द्वेष, आर्य-अनार्य विचार एवं दक्षिण-उत्तर की भावना उत्पन्न करने वाला यह विचार, तात्कालिक राजनैतिक लाभ हेतु विदेशियों एवं विधर्मियों द्वारा योजनाबद्ध प्रचारित किया गया है।

पडोसी देशों में भारत-विरोधी सरकारों के गठन की चिन्ता

ललित गर्ग

भारत के पडोसी देशों में अस्थिरता एवं अराजकता का माहौल चिन्ताजनक है। बांग्लादेश के साथ-साथ भारत के पड़ोसी मुल्कों में हुए हालिया अराजक, हिंसक एवं अस्थिरता के घटनाक्रमों से एक तस्वीर बनती है एवं एक सन्देश उभर कर आता है, वह है, चीनी के द्वारा भारत विरोधी सरकारों के गठन की साजिश। सिर्फ बांग्लादेश ही नहीं, बल्कि मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और श्रीलंका में राजनीतिक उथल-पुथल और तख्तापलट के बाद अस्तित्व में आई सरकारों ने भारत के लिए चुनौतीपूर्ण हालात पैदा कर दिए हैं। भारत को सतर्क एवं सावधानी बरतने की जरूरत है। अब सवाल ये उठते हैं कि भारत के पड़ोसी देशों में हो रही इस अराजकता एवं अस्थिरता के कारण क्या हैं? यह सिर्फ एक संयोग है या फिर साजिश? क्या इसके पीछे चीन का हाथ है? क्या पाकिस्तान भी इसके लिये जिम्मेदार है? पड़ोसी देशों में पनप रही इस राजनीतिक अस्थिरता का भारत पर क्या असर होगा? इसकी भरी-पूरी आशंका है कि चीन ने पाकिस्तानी तत्वों के जरिये शेख हसीना विरोधी आंदोलन को हवा दी। निश्चित ही शेख हसीना की छवि एक अधिनायकवादी शासक की बनी और पश्चिमी देश विशेषकर अमेरिका उनकी निंदा करने में मुखर हो उठा। अमेरिका उनकी नीतियों से पहले से ही खफा था, क्योंकि वह मानवाधिकार और लोकतंत्र पर उसकी नसीहत सुनने को तैयार नहीं थीं। उनका सत्ता से बाहर होना भारत के लिए अच्छी खबर नहीं है, बांग्लादेश में एक अर्से से भारत विरोधी ताकतें सक्रिय हैं। उनका भारत विरोधी चेहरा आरक्षण विरोधी आंदोलन के दौरान भी दिखा। यह ठीक नहीं कि हिंसक प्रदर्शनकारी अभी भी हिंदुओं और उनके मंदिरों के साथ भारतीय प्रतिष्ठानों को निशाना बना रहे हैं। लगभग ऐसी ही स्थितियां चीन और पाकिस्तान ने मालदीव, नेपाल, अफगानिस्तान और श्रीलंका में खड़ी की है।हसीना का जाना या उनका निष्कासन चीन एवं पाकिस्तान की साजिशों का परिणाम है, जो भारत के लिए कई मायनों में झटका है। इसका यह मतलब भी है कि भारत ने पड़ोस में अपने इकलौते स्थिर साथी को अब खो दिया है। भारत अपने चारों ओर से बदहाल, कट्टरवादी, अराजक एवं अस्थिर पड़ोसियों से घिरा है। हमारे पड़ोस में अफगानिस्तान है, जिस पर कट्टरपंथी तालिबान का राज है। भारत-विरोधी समूहों को समर्थन देने का उसका एक काला इतिहास रहा है। पाकिस्तान तो भारत का दुश्मन देश ही है। एक बेहद अशांत पड़ोस, जो कट्टरपंथियों, सैन्य शासकों, दिवालिया अर्थव्यवस्थाओं और जलवायु-परिवर्तन के कारण डूबते देशों में अग्रणी है। अपनी आर्थिक बदहाली के बावजूद वह भारत विरोधी षडयंत्र रचता ही रहता है। वह राजनीतिक अस्थिरता का पर्याय है। विडम्बना देखिये कि पाकिस्तान के एक भी वजीरे-आजम ने अपना कार्यकाल पूरा नहीं किया है। हमेशा वहां की फौज ने उनके कार्यकाल में टांग डाली है। दक्षिण में श्रीलंका और मालदीव हैं। श्रीलंका 2022 में दिवालिया हो गया था। वहां से सामने आई तस्वीरें एवं घटनाक्रम आज के बांग्लादेश से काफी मिलती-जुलती रही हैं। वहां भी प्रदर्शनकारियों ने बड़ा जनआंदोलन किया और जनता ने राष्ट्रपति भवन पर कब्जा कर लिया, जिस कारण राष्ट्रपति गोटाबाया को देश छोड़कर भागना पड़ा था। आर्थिक दिवालियेपन का शिकार यह देश चीन के कर्ज के जाल में फंसा हुआ है। श्रीलंका के कर्ज का एक बड़ा हिस्सा चीन का था, जिस कारण चीन ने यहां के हंबनटोटा बंदरगाह पर कब्जा कर लिया था। हालात यह हो गए थे कि श्रीलंका का विदेशी मुद्रा भंडार खाली हो गया था।

मालदीव एक समय भारत का सहयोगी हुआ करता था। वहां की अर्थव्यवस्था चीन और भारत पर निर्भर है। हालांकि, मालदीव की भारत से नजदीकी हमेशा चीन को खटकती थी, जिस कारण उसने इस देश को अपने कर्ज के जाल में फंसाया। धीरे-धीरे इस देश की माली हालत बुरी होने लगी, जिसके बाद यहां चीन समर्थक और इंडिया आउट का नारा देने वाले मोहम्मद मुइज्जू की सरकार बनी। पाकिस्तान एवं चीन के दबाव में उनके नए राष्ट्रपति के सुर बदले हुए हैं। वहां भारत-विरोधी स्वर उग्रतम बने हुए हैं। मुइज्जू ने राष्ट्रपति बनने के बाद सबसे पहले चीन का ही दौरा किया था और इसके बाद उन्होंने कई भारत विरोधी फैसले किए, जिसमें मालदीव से भारतीय सैनिकों की वापसी भी शामिल थी। वहां भारत-विरोधी स्वर उग्रतम बने हुए हैं।

नेपाल बीते कई सालों से राजनीतिक अस्थिरता के दौरे से गुजर रहा है। हाल ही में यहां एक बार फिर से सत्ता परिवर्तन हुआ और प्रो-भारत माने जाने वाली प्रचंड सरकार सत्ता से बाहर हो गई। अब यहां चीन समर्थक केपी शर्मा ओली की सरकार है। ओली इससे पहले 2015-16 में नेपाल के प्रधानमंत्री रह चुके हैं। उस समय भारत और नेपाल के संबंध काफी तनावपूर्ण रहे थे। नेपाल में गत 16 वर्षों में 14 सरकारें बदल चुकी हैं। हालात इतने बदहाल हैं कि वहां पर कुछ लोग राजशाही को फिर से बहाल करना चाहते हैं। नेपाल में भी चीन ने जाल बिछा रखा है। चीन विस्तारवादी, अलोकतांत्रिक और अपने आस-पड़ोस के देशों के साथ धौंस-डपट करने वाला देश है। वह भारत के भूखंडों पर अपनी मिल्कियत जताता रहता है। भूटान में घरेलू राजनीति स्थिर है, लेकिन वह चीन के साथ सीमा-समझौते पर हस्ताक्षर करना चाहता है, और यह भारत के लिए चिंता का बड़ा कारण है। भारतीय उपमहाद्वीप के मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, भूटान और श्रीलंका के बाद अब बांग्लादेश में उत्पन्न होने वाली प्रतिकूल परिस्थितियों को दुनिया चुपचाप सब देख रही है, वहीं भारत इसके लिए खुद को तैयार कर रहा है, क्योंकि बांग्लादेश की घटनाओं का उस पर सीधा असर होगा। भारत शांति कायम रखने एवं पडोसी देशों से मित्रता कायम रखने के अपने संकल्पों एवं रणनीतियों के लिए इन देशों पर भरोसा नहीं कर सकता। हमारे इर्द-गिर्द मची उथलपुथल, अस्थिरता एवं अराजकता हमारे वैश्विक एजेंडे को भी बाधित करती है। भारत की आबादी 1.4 अरब है। उसके सभी पड़ोसियों की कुल आबादी 50 करोड़ है। अर्थव्यवस्था के साथ भी ऐसा ही है। भारत की जीडीपी तीन ट्रिलियन डॉलर है। बाकी सब मिलाकर लगभग एक ट्रिलियन हैं। भारत समर्थ है, शक्ति सम्पन्न है, दुनिया की तीसरी अर्थ-व्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है, इसलिये उसे अधिक बलों की तैनाती, अधिक रक्षा खर्च और सीमाओं पर अधिक बुनियादी ढांचों का निर्माण करना होगा। क्योंकि भारत के सभी पडोसी देशों पर चीन का दबदबा है और उसके दबाव में भारत के लिये कभी भी संकट बन सकते हैं।

बांग्लादेश के घटनाक्रम पर भारत की सतर्कता, विवेक एवं समझदारी सराहनीय है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार पडोसी देशों में उत्पन्न हालातों पर समझ एवं संयम से कदम उठाती रही है। बांग्लादेश की तख्तापलट घटनाओं पर भी उसने पहले सर्वदलीय बैठक बुलाई, विपक्षी दलों ने महत्वपूर्ण भूमिका के साथ अपनी बात रखी। ऐसे ज्वलंत मुद्दों पर सर्वसम्मति बनना जीवंत लोकतंत्र का प्रमाण है। ऐसा अनुकरणीय उदाहरण पडोसी देशों में न मिलना ही उनकी अस्थिरता एवं अराजकता का बड़ा कारण है। किसी भी लोकतांत्रिक देश में ऐसी स्थिति कतई नहीं बननी चाहिए कि जहां राजनीतिक दलों के बीच दूरियां इस कदर बढ़ जायें कि फौज का दखल देना पड़े या पडोसी देश अपनी स्वार्थों की रोटियां सेंकने में सफल हो जाये। भारत के पडोसी देशों के लोग केवल बुराइयों से लड़ते नहीं रह सकते, वे व्यक्तिगत एवं सामूहिक, निश्चित सकारात्मक लक्ष्य के साथ जीना चाहते हैं। अन्यथा जीवन की सार्थकता नष्ट हो जाएगी।

इन पडोसी देशों के नेता दो तरह के हैं- एक वे जो कुछ करना चाहते हैं, दूसरे वे जो कुछ होना चाहते हैं। असली नेता को सूक्ष्मदर्शी और दूरदर्शी होकर, प्रासंगिक और अप्रासंगिक के बीच भेदरेखा बनानी होती है। संयुक्त रूप से कार्य करें तो सभी पडोसी देश मिलकर विश्व में एक बड़ी ताकत बन सकते हैं। लेकिन उन्होंने सहचिन्तन को शायद कमजोरी मान रखा है। नेतृत्व के नीचे शून्य तो सदैव खतरनाक होता ही है पर यहां तो ऊपर-नीचे शून्य ही शून्य है। इन पडोसी देशों के स्तर पर तेजस्वी और खरे नेतृत्व का नितान्त अभाव है। भारतीय उपमहाद्वीप के देशों के केनवास पर शांति, प्रेम, विकास और सह-अस्तित्व के रंग भरने की अपेक्षा है। भारत इस स्थिति में है, उसे मनोबल के साथ पडोसी देशों में स्थिरता, शांति, लोकतंत्र एवं आपसी समझ की ज्योत जलाने के लिये तत्पर रहना चाहिए, जो उन देशों के साथ भारत के लिये भी जरूरी है।

जिलाधिकारी ने स्वयं खायी फाइलेरिया की दवा, दो सितम्बर तक चलेगा कार्यक्रम

फतेहपुर। भारत को फाईलेरिया मुक्त बनाने के लिए राष्ट्रीय फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के तहत शनिवार को जनपद में फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम हुआ। सरदार बल्लभ भाई पटेल प्रेक्षागृह में आयोजित कार्यक्रम में आईडीए अभियान 2024 का जिलाधिकारी सी. इंदुमती ने शुभारम्भ किया। फाइलेरिया से बचाव के उपाय के बारे में उन्होंने जानकारी ली एवं अपनी बातों को साझा किया। इस संबंध में उन्होंने जानकारी ली तो मालूम हुआ कि यह फाईलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम10 अगस्त से 02 सितम्बर 2024 तक चलाया जायेगा। जिलाधिकारी ने स्वयं फाइलेरिया की दवा खाकर नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि फाइलेरिया की दवा अवश्य खाए, क्योंकि फाइलेरिया जिसे हाथी पांव भी कहा जाता है यह एक लाईलाज बीमारी है, जो मच्छर के काटने से होती है। यह बीमारी आम जनमानस को अपाहिज भी कर सकती है। उन्होंने कहा कि खाली पेट दवा न खाए, दवा खाने से पहले नाश्ता अवश्य करें। विद्यालय के छात्राओं को कु0आयशा, कु0हर्षिता, कु0 चित्रा को अपने

वक्फ बोर्ड की आड़ में जमीन कब्जाने वालों पर शिकंजा कसने की तैयारी

वक्फ और वक्फ की संपत्तियों को लेकर हिंदुस्तान में अक्सर सही-गलत चर्चा होती रहती है। हममें से अधिकांश लोगों ने वक्फ का नाम तो सुना है, लेकिन वह इसके बारे में बहुत कुछ जानते नहीं हैं। वक्फ होता क्या है। किसी मस्जिद या दूसरे धर्मस्थल के वक्फ होने का मतलब क्या है? और क्या मोदी सरकार द्वारा वक्फ बोर्ड के संविधान में तब्दीली की कोशिशों का असर मुस्लिम धर्मस्थलों के स्टेटस पर पड़ सकता है? चूंकि भारत में रेलवे और रक्षा मंत्रालय के बाद सबसे बड़ा भूस्वामी वक्फ बोर्ड ही है। इसलिए हम इन सारे सवालों का जवाब जानने की कोशिश करेंगे। सबसे पहले यह जान लेना जरूरी है कि भारत में इस्लाम की आमद के साथ वक्फ के उदाहरण मिलने लगे थे। दिल्ली सल्तनत के वक्त से वक्फ संपत्तियों का लिखित जिक्र मिलने लगता है। मुगल शासन काल में क्योंकि ज्यादातर संपत्ति राजा महाराजाओं के पास ही होती थी, इसीलिए प्राय: वही वाकिफ होते, और वक्फ कायम करते जाते। जैसे कई बादशाहों ने मस्जिदें बनवाईं, वो सारी वक्फ हुईं और उनके प्रबंधन के लिए स्थानीय स्तर पर ही इंतजामिया कमेटियां बनती रहीं। इसके पश्चात 1947 में आजादी के बाद पूरे देश में पसरी वक्फ संपत्तियों के लिए एक स्ट्रक्चर बनाने की बात उठने लगी। इस तरह 1954 में संसद ने वक्फ एक्ट 1954 पास किया। इसी के नतीजे में वक्फ बोर्ड बना। ये एक ट्रस्ट था, जिसके तहत सारी वक्फ संपत्तियां आ गईं। 1955 में यानी कानून लागू होने के एक साल बाद, इस कानून में संशोधन कर राज्यों के लेवल पर वक्फ बोर्ड बनाने का प्रावधान किया गया। इसके बाद साल 1995 में नया वक्फ बोर्ड एक्ट आया। 2013 में मनमोहन सरकार के समय इसमें कई संशोधन करके इसे पूरी तरह से तानाशाही रूप दे दिया गया।

Times and Space NEWS
टाइम्स एंड स्पेस
(हिन्दी अंग्रेजी साप्ताहिक)
स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक हिमांशु श्रीवास्तव द्वारा जय बजरंग प्रिंटर्स, 373, एफ-ब्लाक, पनकी, कानपुर नगर से मुद्रित। 53 रैना मार्केट, नवाबगंज, कानपुर नगर (उ.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक
हिमांशु श्रीवास्तव
मो.: 9918558866
मुख्य कार्यपालक अधिकारी
राहुल त्यागी
मो०9005199788
उप सम्पादक
कंचन श्रीवास्तव
प्रशान्त तिवारी
कुंवर मनीष सिंह सेंगर
स्मृति यादव
मध्य प्रदेश रीजनल ऑफिस
म.नं.20 फेस.2
नियर दानापानी रेस्टोरेंट
भोपाल...462039
website-
www.timesandspace.com
email
timesandspace.com@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र कानपुर न्यायालय होगा।

ओलंपिक

एक सरहद, दो मां, नीरज और अरशद की मां ने पेश की खेल भावना की मिसाल

गोल्ड जिसका है , वो भी हमारा ही लड़का है, ए बात सिर्फ एक मां ही कह सकती है। अद्भुत। शोएब अख्तर ने दो पंक्तियों में सरहद के आर पार के जज्बात बयां कर दिए जो चैम्पियन भालाफेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा और अरशद चोपड़ा की मां द्वारा एक दूसरे के बच्चे को अपना बच्चा कहे जाने के बाद उमड़े हैं। आम तौर पर भारत और पाकिस्तान की टक्कर खेल के किसी भी मैदान पर होने के बाद सोशल मीडिया पर लोग जहर उगलते दिखते हैं लेकिन इस बार आलम अलग है। इसका श्रेय नीरज की मां सरोज देवी और अरशद की मां रजिया परवीन को भी जाता है। नदीम ने गुरुवार की रात 92.97 मीटर के स्किॉर्ड ओलंपिक प्रयास से स्वर्ण पदक अपने नाम किया जबकि नीरज ने सत्र के अपने सर्वश्रेष्ठ थ्रो 89.45 मीटर के साथ रजत पदक जीता। नीरज लगातार दो ओलंपिक व्यक्तिगत स्पर्धा का पदक जीतने वाले तीसरे और ट्रैक एवं फील्ड के पहले भारतीय खिलाड़ी बन गए।

सरोज ने पानीपत के खंडरा गांव में पीटीआई वीडियो को दिए इंटरव्यू में कहा, हम रजत पदक से बहुत खुश हैं, जिसने स्वर्ण पदक जीता वह भी हमारा बच्चा है और जिसने रजत पदक प्राप्त किया वह भी हमारा बच्चा है... सभी एथलीट हैं, सभी कड़ी मेहनत करते हैं। उन्होंने गुरुवार देर रात को दिए इस इंटरव्यू में कहा, नदीम भी अच्छा है, वह अच्छा खेलता है, नीरज और नदीम में कोई अंतर नहीं है। हमें स्वर्ण और रजत पदक मिला, हमारे लिए कोई अंतर नहीं है।

नीरज और नदीम दोनों प्रतिद्वंद्वी होने के बावजूद मैदान के बाहर अच्छे दोस्त हैं। अरशद की मां रजिया परवीन ने इंडी उर्दू चैनल से कहा, वे दोनों दोस्त नहीं बल्कि भाई हैं। मैं नीरज के लिए भी दुआ करूंगी कि उसे और कामयाबी मिले। उन्होंने कहा, नीरज भी हमारे बच्चे जैसा है। मैं दुआ करूंगी कि वह और पदक जीते। खेल में जीत हार होती है लेकिन ए दोनों भाई हैं। सच भी है जब तोक्यो ओलंपिक फाइनल के दौरान अरशद को भालों के आसपास देखा गया तो सोशल मीडिया पर उनकी ट्रोलिंग हुई थी कि वह नीरज के भाले से छेड़छाड़ कर रहे हैं लेकिन उस समय नीरज ने उनका बचाव किया था। इसके अलावा अरशद ने नया भाला खरीदने के लिए लोगों से मदद मांगी तो नीरज ने भी मदद की पेशकश की थी।

चूरमा से होगा नीरज का स्वागत :

नीरज का देशी खाने के प्रति लगाव जगजाहिर है और उनका परिवार दो बार के ओलंपिक पदक विजेता का उनके पसंदीदा व्यंजन चूरमा के साथ स्वागत करने की योजना बना रहा है। सरोज ने कहा, उसने वास्तव में अच्छा प्रदर्शन किया। हम उसका स्वागत चूरमा से करेंगे जो उसका पसंदीदा है। मुझे खुशी है, लोग पटाखे जला रहे हैं, हम लड्डू बना रहे हैं। नीरज का यह प्रदर्शन काफी सराहनीय है क्योंकि सात खिलाड़ियों ने 86 मीटर से अधिक दूरी हासिल की थी। नीरज की चाची कमलेश ने कहा, हम बहुत खुश हैं। उसने इस सत्र का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। सभी 88-89 मीटर के करीब थे इसलिए प्रतिस्पर्धा बहुत कठिन थी। यह स्वर्ण या रजत जीतने के बारे में नहीं है, बल्कि पदक जीतने के बारे में है और उसने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। नीरज भारत के सबसे प्रतिष्ठित एथलीटों में से एक है, जिन्होंने ओलंपिक, विश्व चैंपियनशिप, डायमंड लीग, एशियाई खेलों और राष्ट्रमंडल खेलों सहित हर टूर्नामेंट में स्वर्ण पदक जीता है।

कमलेश ने कहा, तोक्यो के बाद रजत के अलावा कोई पदक नहीं बचा था, उसकी भी जरूरत थी इसलिए उसे मिल गया। उन्होंने कहा कि नदीम के बड़े प्रयास (92.97 मीटर) के बाद परिवार को अंदाजा था कि नीरज के स्वर्ण जीतने की संभावना कम हो गई है। उन्होंने कहा, नदीम के थ्रो के बाद हमें लग रहा था (कि वह स्वर्ण जीतेगा) लेकिन वह भी हमारा बेटा है, हम उसके लिए खुश हैं। वह एशिया का बेटा है। हम नदीम और नीरज के बीच अंतर नहीं करते। दोनों ने स्वर्ण और रजत हासिल किया है और हम बहुत खुश हैं।

नीरज और हॉकी टीम के कांस्य मैच ने ओलंपिक वेबसाइट और ऐप दिया बढ़ावा

भारत के शीर्ष भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा और हॉकी टीम की कांस्य पदक मैच के कारण पेरिस ओलंपिक वेबसाइट और खेलों के लिए समर्पित ऐप पर उपयोगकर्ताओं की संख्या में गुरुवार को भारी वृद्धि हुई है। नीरज ने गुरुवार को यहां भाला फेंक में रजत पदक जीता जबकि भारतीय हॉकी टीम ने लगातार दूसरी बार कांस्य पदक अपने नाम किया। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के कॉर्पोरेट संचार और सार्वजनिक मामलों के निदेशक ब्रिश्चियन क्लाउ ने शुक्रवार को कहा कि 273 मिलियन (27.3 करोड़) उपयोगकर्ताओं ने ओलंपिक वेबसाइट और ऐप को देखा है, जिनमें से सबसे अधिक संख्या नीरज और भारतीय हॉकी टीम की सफलता के कारण भारत से आई है। क्लॉउ ने लिखा, पेरिस 2024 के लिए ओलंपिक वेब और ऐप 273 मिलियन उपयोगकर्ताओं तक पहुंच गया है, जिसमें कल (गुरुवार) इन खेलों के दौरान भारत के उपयोगकर्ताओं की संख्या सबसे अधिक रही। इस दौरान नीरज चोपड़ा और पुरुष हॉकी टीम ने देश के लिए चौथे और पांचवें पदक हासिल किए। भारतीय सुपरस्टार नीरज ओलंपिक में लगातार दूसरा स्वर्ण पदक जीतने की अपनी कोशिश में असफल रहे और उन्हें पाकिस्तान के अरशद नदीम से पीछे रहकर रजत पदक से संतोष करना पड़ा। हरमनप्रीत सिंह के नेतृत्व में पुरुष हॉकी टीम ने 52 वर्षों में पहली बार खेलों में लगातार कांस्य पदक जीते, जिसमें कप्तान ने स्पेन पर 2-1 की जीत में दोनों गोल किए।

सोशल मीडिया

सोशल मीडिया एल्गोरिदम गोपनीयता से घिरा, इसे बदलने की कोशिश जारी

सोशल मीडिया के प्रभाव को समझने के लिए हमें पहले इसकी आंतरिक कार्यप्रणाली को समझना होगा। इसके लिए उपयोगकर्ताओं द्वारा साझा की गई सामग्री और एल्गोरिदम का अवलोकन करना आवश्यक है जो यह नियंत्रित करते हैं कि कौन सी सामग्री दिखाई दे और अनुशंसित हो। हमें यह भी देखना चाहिए कि रोजमर्रा की सेटिंग में उपयोगकर्ता इन प्लेटफार्मों के साथ कैसे संवाद करते हैं। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि सोशल मीडिया व्यक्तिगत और तेजी से बदलता है। प्रत्एक उपयोगकर्ता के लिए सामग्री अलग-अलग होती है और फ़ीड से तुरंत गायब हो जाती है।

टिकटॉक लोगो मोबाइल फोन पर कंप्यूटर स्क्रीन के सामने दिखाई देता है जो टिकटॉक होम स्क्रीन प्रदर्शित करता है। इससे उपयोगकर्ताओं के अनुभवों और समाज पर सोशल मीडिया के व्यापक प्रभाव के बारे में सामान्य निष्कर्ष निकालना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

लेकिन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के पीछे की कंपनियां जनता को जानकारी देने से मना कर देती हैं। वे अक्सर डेटा पहुंच को सीमित करने के कारणों के रूप में गोपनीयता संबंधी चिंताओं और प्रतिस्पर्धी हितों का हवाला देते हैं। ये चिंताएं संभवतः वैध हैं। लेकिन उन्हें अक्सर निंदनीय ढंग से लागू किया जाता है। और उन्हें अधिक पारदर्शी और नैतिक अनुसंधान डेटा पहुंच की संभावना को नहीं रोकना चाहिए।

परिणामस्वरूप, मुझे और मेरे सहकर्मियों को सोशल मीडिया की आंतरिक कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए कुछ नया करने के बारे में सोचना पड़ा। हम सार्वजनिक डेटा को स्क्रैप करना, प्लेटफ़ॉर्म ऑडिट और अन्य फोरेंसिक तरीकों का उपयोग करते हैं। हालांकि, ये तरीके अक्सर सीमित होते हैं और कानूनी जोखिम से भरे होते हैं।

इस महत्वपूर्ण संग्रह ने हमें अवैध जुआ विज्ञापनों को उजागर करने और घोटाले वाले विज्ञापनों की व्यापकता को ट्रैक करने में सहायता की है। हमने इस साक्ष्य का उपयोग अस्वास्थ्यकर भोजन के विज्ञापन और हरित धुलाई के बारे में पूछताछ के लिए भी किया है।

यह जानने में सक्षम होने से अधिक कि विज्ञापन के कौन से रूप प्रचलित हैं और वे किसको लक्षित करते हैं, इस काम ने हमें एल्गोरिथम लक्ष्यीकरण प्रक्रिया के बारे में विवरण उजागर करने में भी मदद की है। ऑस्ट्रेलियाई इंटरनेट वेधशाला का लक्ष्य कई अन्य प्लेटफार्मों पर इस और इसी तरह की प्रक्रियाओं के बारे में हमारी समझ को और गहरा करना है। हम जल्द ही इसे हासिल करने में मदद के लिए जनता के सदस्यों को अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से डेटा दान करने के लिए आमंत्रित करेंगे।

ऑस्ट्रेलियाई इंटरनेट वेधशाला

प्रत्यक्ष प्लेटफ़ॉर्म डेटा एक्सेस की अनुपस्थिति में, हम यह समझने के लिए कि सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म कैसे संचालित होते हैं, डेटा दान जैसे अन्य तरीकों का भी उपयोग कर रहे हैं। डेटा दान लोगों को सख्त नैतिक दिशानिर्देशों के तहत किए गए स्वतंत्र अध्ययन के लिए अपने सोशल मीडिया अनुभव के विशिष्ट हिस्सों को स्वेच्छा से साझा करने में सक्षम बनाता है। यह उपयोगकर्ता की गोपनीयता और स्वायत्तता का सम्मान करते हुए बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। दो डेटा दान परियोजनाओं ने ऑस्ट्रेलिया में इंटरनेट खोज और लक्षित विज्ञापन के बारे में हमारी समझ में सुधार किया है।

अगले चार वर्षों में हम नई ऑस्ट्रेलियाई इंटरनेट वेधशाला के माध्यम से डेटा दान के दायरे का तेजी से विस्तार करेंगे। यह रिसर्च इंफ्रास्ट्रक्चर फेसबुक, टिकटॉक और यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के यूजर्स का डेटा इकट्ठा करेगा और उसका विश्लेषण करेगा।

इससे न केवल इस पर नई रोशनी पड़ेगी कि लोग सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कैसे संवाद करते हैं, बल्कि इस पर भी कि वे क्या सामग्री देखते हैं और इसे कैसे वितरित किया जाता है। यह बढ़ी हुई दृश्यता सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म को शक्ति प्रदान करने वाले एल्गोरिदम और समाज पर उनके प्रभाव के बारे में हमारे ज्ञान में सुधार करेगी।

उदाहरण के लिए, 2021 में अपनी शुरुआत के बाद से, ऑस्ट्रेलियाई विज्ञापन वेधशाला ने 2,100 से अधिक सामान्य ऑस्ट्रेलियाई लोगों से लगभग 800,000 फेसबुक विज्ञापन दान एकत्र किए हैं। फेसबुक विज्ञापन डेटा के

ऑस्ट्रेलिया में डेटा पहुंच का विधान

ऑस्ट्रेलिया सरकार ने इंटरनेट और सोशल मीडिया के विभिन्न पहलुओं को विनियमित करने का प्रयास किया है। ऑनलाइन सुरक्षा अधिनियम और गलत सूचना और दुष्प्रचार को लक्षित करने वाला हाल ही में प्रस्तावित कानून डिजिटल प्लेटफार्मों के प्रभाव पर सरकार की चिंता को दर्शाता है। हालांकि, ये नियामक प्रयास त्रुटिपूर्ण रहे हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि वे अक्सर ऑनलाइन होने वाली वास्तविक गतिविधियों और इंटरैक्शन की व्यापक समझ के बिना आगे बढ़ रहे हैं। इस ज्ञान के बिना, विनियम या तो बहुत व्यापक होने, वैध अभिव्यक्ति और पहुंच को प्रभावित करने, या बहुत संकीर्ण होने, ऑनलाइन नुकसान के मूल कारणों को संबोधित करने में विफल होने का जोखिम उठाते हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को समझने के लिए शोधकर्ताओं के प्रयासों को मजबूत करने के लिए, यह आवश्यक है कि ऑस्ट्रेलियाई सरकार कानून पारित करके यूरोपीय संघ के नेतृत्व का पालन करे जो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों को महत्वपूर्ण डेटा तक पहुंच प्रदान करने के लिए बाध्य करता है। इससे प्लेटफ़ॉर्म की जवाबदेही बढ़ेगी। यह शोधकर्ताओं को हमारे डिजिटल भविष्य की सुरक्षा के लिए आवश्यक पारदर्शिता और समर्थन के साथ महत्वपूर्ण, स्वतंत्र, सार्वजनिक-हित अनुसंधान करने के लिए भी सशक्त बनाएगा।

द कन्वरसेशन

सामाजिक पहल

मनु भाकर ने महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराधों पर चिंता जताई

पीपल अगेंस्ट रेप इन इंडिया को दिया समर्थन

हाल ही में ओलंपिक पदक विजेता मनु भाकर ने पेरिस से भारत लौटने पर परी की संस्थापक सदस्य योगिता भयाना से मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान मनु भाकर ने देश में महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराधों पर गहरी चिंता व्यक्त की और महिलाओं की सुरक्षा के लिए सख्त कार्यवाही और सामूहिक प्रयासों पर जोर दिया। मनु भाकर ने कहा, मैं पीपल अगेंस्ट रेप इन इंडिया का समर्थन करती हूं क्योंकि यहां हम महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखते हैं। हम साथ मिलकर अपनी आवाज उठाएंगे और पीड़ित लोगों के लिए न्याय सुनिश्चित करेंगे। महिलाओं की सुरक्षा पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता है और परी इस लड़ाई

में आशा की किरण के रूप में खड़ा है।

परी की संस्थापक योगिता भयाना ने कहा, सबसे पहले, मैं हमारी चैंपियन मनु भाकर को तिरंगे का मान बढ़ाने के लिए उनका धन्यवाद करती हूं। आज देश के बेटी ने देश का गौरव बढ़ाया है। इसका अभिमान आज हर एक भारतीय को है। इसके साथ ही, मैं परी के प्रति उनके अटूट समर्थन के लिए धन्यवाद देना चाहती हूँ। महिलाओं की सुरक्षा के प्रति उनकी चिंता हमारे लक्ष्य से गहराई से मेल खाती है। इस लड़ाई में हमारे साथ खड़े होने की उनकी इच्छा वास्तव में प्रेरणादायक है, उन्होंने आगे कहा।

इस चर्चा में मनु और योगिता ने महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराधों के समाधान के लिए जागरूकता, शिक्षा और सामुदायिक भागीदारी के महत्व पर भी जोर दिया। योगिता, जो ऐसे मुद्दों को लेकर हमेशा से सबसे आगे रही हैं, ने मनु के समर्थन का स्वागत किया और महिलाओं की सुरक्षा के लिए अपनी अथक लड़ाई जारी रखने की संकल्प ली।

मेरे साँई !

ये ही जीवन लक्ष्य एक है
प्रभु - दर्शन हम पाएँ ।
साँई आपकी कृपा से जीवन
भवसागर हमें पार कराएँ॥
डॉ.अजीत पाठक

आज का इतिहास

स्पाइडरमैन का चरित्र पहली बार कॉमिक बुक में नजर आया

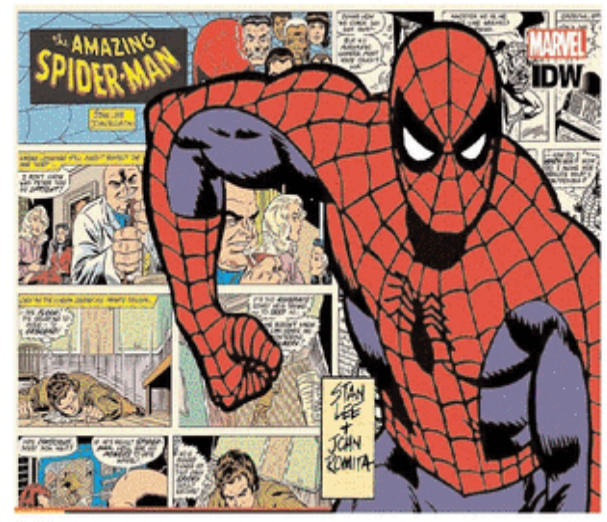

साल के आठवें महीने का दसवां दिन कई छोटी बड़ी घटनाओं के साथ इतिहास के पन्नों में दर्ज है। इनमें एक दिलचस्प खबर यह है कि बच्चों का चहेता आभासी चरित्र स्पाइडरमैन पहली बार कॉमिक बुक में नजर आया। इसे बच्चों ने इतना पसंद किया कि बाद में यह कार्टून और फिर फिल्मों के पर्दे पर भी नजर आया। गरीबों और मजलूमों का मसीहा स्पाइडरमैन लंबे वक्त तक दुनियाभर में बच्चों का पसंदीदा चरित्र रहा।

1809 : इक्वाडोर को स्पेन से आजादी मिली।
1822 : सीरिया में विनाशकारी भूकंप से 20 हजार लोगों की मौत।
1831 : वैरेबियाई द्वीप समूह बारबाडोस में चक्रवाती तूफान से डेढ़ हजार लोगों की मौत।
1894 : देश के चौथे राष्ट्रपति वी वी गिरि का जन्म।
1966 : अमेरिका ने अंतरिक्ष में रॉकेट उतारने की लिए उपयुक्त स्थान का चित्र लेने पहला अंतरिक्ष यान भेजा।
1962 : आज ही के दिन बच्चों का चहेता स्पाइडरमैन कॉमिक बुक अमेजिंग फैंटेसी में नजर आया।
1979 : उपग्रह प्रक्षेपण यान एसएलवी-3 प्रक्षेपित।
2000 : पड़ौसी देश श्रीलंका में सिरीमावो भंडारनायके का प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा, आर. विक्रमानयके नए प्रधानमंत्री नियुक्त।
2000 : आत्मनिर्णय के अधिकार पर जिनेवा में अंर्ताष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया।
2001 : रूस ने अमेरिकी प्रक्षेपास्त्र प्रणाली को सशर्त समर्थन दिया।
2004 : संयुक्त राष्ट्र और सूडान के बीच दारफुर कार्ययोजना पर हस्ताक्षर।
2006 : तमिल विद्रोहियों पर फ़ौजी कार्रवाई में श्रीलंका में 50 नागरिक मारे गए।
2008 : चेन्नई के एक लैब में एंटी एड्स वैक्सीन का सफल परीक्षण किया गया।

राशिफल »

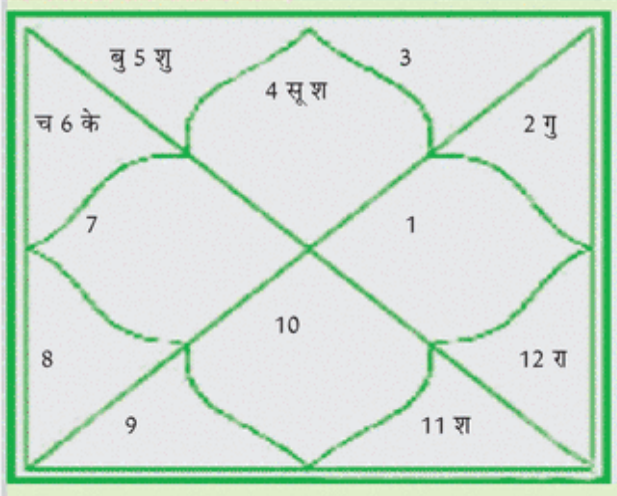

आज का पंचांग

शनिवार तदनुसार श्रावण मास शुक्ल पक्ष षष्ठी रात्रि संपूर्ण दिन-रात।
नक्षत्र: चित्रा संपूर्ण दिन-रात।
संवत- 2081
शकसंवत- 1946
दिशाशूल- पूर्व
राहुकाल- 09.06 बजे से 10.46 बजे तक

मेष: अगर किसी से प्रेम करते हैं तो मिलने की संभावना है।
वृष: धन की हानि हो सकती है सचेत रहे।
मिथुन: दोस्तों के साथ कहीं घूमने का प्लान बन सकता है।
कर्क: बच्चों का ख्याल रखें चोट लगने की संभावना है।
सिंह: पेट खराब हो सकता है। पानी का सेवन करे।
कन्या: कहीं से धन आने की संभावना है लेकिन ऐसे ही चला जाएगा।
तुला: अपने परिवार के साथ समय बिताए। जल्द खुश खबरी मिलेगी।
वृश्चिक: व्यापार में घाटा हो सकता है।
धनु: नौकरी में तरक्की मिलने की संभावना है।
मकर: पत्नी से मनमुटाव हो सकता है लेकिन थोड़ा धैर्य रख कर ही बात करे।
कुंभ: अपने स्वास्थ्य पर ध्यान रखे। खराब हो सकता है।
मीन: कहीं जाने का प्लान बन सकता है।

संक्षिप्त समाचार

कार्बन उत्सर्जन को कम करने में महिलाओं का हो सकता है बहुत बड़ा योगदान- राजेन्द्र निगम

महोबा संवाददाता संजना तिवारी

चरखारी (महोबा) ब्लाक क्षेत्र के ग्राम फतेहपुर में जन जागरूकता अभियान चलाया गया जिसमें जलवायु परिवर्तन, से उत्पन्न संकट और उसके प्रभावों को कम करने में महिलाओं का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे पर्यावरण के साथ जुड़ी हुई हैं और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को सबसे ज्यादा महसूस करती हैं।

महिलाएं जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं लोकपथ चैरिटेबल ट्रस्ट महोबा द्वारा चरखारी विकासखंड के ग्राम फतेहपुर मे बैठक के दौरान जलवायु परिवर्तन से होने वाले संकट और उसके प्रभाव को कम करने कार्बन उत्सर्जन को कम करने के उपायों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई उन्हें बताया गया कि पर्यावरण पर्यावरण संरक्षण में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, जैसे कि वे ऊर्जा की बचत, जल संचयन, और कचरा प्रबंधन में मदद कर सकती हैं।

समन्वयक दीपक कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि समुदाय टिकाऊ जीवनशैली अपनाकर जलवायु परिवर्तन को कम कर सकते हैं, जैसे कि सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, स्थानीय उत्पादों का उपयोग, और ऊर्जा-कुशल उपकरणों का उपयोग।

महिलाएं जलवायु परिवर्तन के बारे में जागरूकता फैलाने में मदद कर सकती हैं, विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी समुदायों में, जहां जलवायु परिवर्तन के प्रभाव सबसे ज्यादा महसूस किए जाते हैं।

संस्था द्वारा चरखारी विकासखंड के पांच ग्राम पंचायत में महिलाओं तथा किशोरियों के समूह बनाकर उन्हें जलवायु परिवर्तन के संकट एवं उनके प्रभाव को कम करने के लिए जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है आज की बैठक में किशोरियों और महिलाओं ने सहभागिता की 50 परिवारों द्वारा दो दो पेड़ लगाने का संकल्प लिया गया इस कार्यक्रम में तारा देवी पुष्पा रानी, नम्रता ,आदि सहित आधा सैकड़ा महिलाओं एवं किशोरियों ने सहभागिता की।

जब गाँव मे दिखे सैकड़ों अन्ना जानवर तो प्रधान पर फूटा ग्रामीणों का गुस्सा

महोबा संवादाता संजना तिवारी

(सिजहरी महोबा)रात के अंधेरे में सैकड़ों की संख्या में गाँव मे अन्ना जानवरों को आते देखा तो गाँव वालों के होश उड़ गए। जब ग्रामीण इकट्ठा होकर अन्ना जानवरों के पास पहुँचे तो उनको जानवरों के साथ बाहरी लोग भी मिले जो उनको इस गाँव में छोड़ने आए थे जब ग्रामीणों ने उनसे उनके बारे में पूछा तो उन्होंने खुद को मध्यप्रदेश के पठा गांव का निवासी बताया तभी ग्रामीणों ने इस घटना की जानकारी पुलिस को दी और उनको पकड़ कर बैठा लिया

आपको बता दें कि पूरा मामला महोबा जनपद के सिजहरी गाँव का है जहां देर रात सैकड़ों की संख्या में अन्ना जानवरों का एक झुंड गाँव में दाखिल हुआ तो उसे देख गाँव वालों के होश उड़ गए। जब गाँव के लोग इकट्ठे होकर उनके पास पहुँचे तो देखा कि लगभग डेढ़ दर्जन अज्ञात लोग इन अन्ना जानवरों को लेकर गाँव मे प्रवेश कर रहे थे जिनको ग्रामीणों ने पकड़ कर पुलिस को सूचित करते हुए पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस द्वारा पूछताछ करने पर उन्होंने बताया कि पड़ोसी राज्य मध्यप्रदेश के पठा गांव के निवासी हैं और हम लोग सिजहरी प्रधान के कहने पर ये अन्ना जानवर यहाँ छोड़ने आए थे ग्रामीणों का कहना है कि प्रधान की मिलीभगत से हम गाँव वालों की फसलें बर्बाद करने का प्रयास किया गया है फिलहाल सभी आरोपियों को पुलिस पकड़ कर ले गई है अब देखने वाली बात यह है कि उन पर कार्यवाही होती है या प्रधान जी द्वारा मामले को दबा दिया जायेगा 7

मोटरसाइकिल से भदोही जा रहे तीन दोस्त सड़क हादसे का हुए शिकार, दो मौत, एक घायल

फतेहपुर। जिले में शनिवार को सड़क हादसे में एक ही बाइक पर सवार तीन दोस्तों में से दो की मौके पर मौत हो गई, जबकि एक की हालत को गंभीर देखते हुए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस ने हादसे की खबर परिजनों को देकर शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। गोपीगंज थाना क्षेत्र के बिरनमई गांव निवासी अंकुर उपाध्याय (25), भदोही के ही गांव धनीपुर थाना गोपीगंज निवासी सुमित मिश्रा अच्छे दोस्त थे। अंकुर नोएडा में एक सॉफ्टवेयर कंपनी में नौकरी करता था, जबकि सुमित मिश्रा हरियाणा के फरीदाबाद स्थित आईसीआईसीआई बैंक में था। साथ ही मेरठ निवासी नीरज कुमार भी अंकुर के साथ सॉफ्टवेयर कंपनी में काम करता है। तीनों शनिवार दोपहर गाजियाबाद से एक ही बाइक पर सवार होकर भदोही के लिए निकले थे। बाइक सवार जैसे ही फतेहपुर जिले के खागा कोतवाली क्षेत्र के कौशांबी बॉर्डर पर कानपुर-प्रयागराज हाईवे स्थित अमाव गांव के पास पहुंचे, तभी हाईवे किनारे खड़े एक ट्रक में तेज़ रफ़्तार बाइक सवार पीछे से जा घुसे। हादसे में अंकुर और सुमित की मौके पर ही मौत हो गई। नीरज गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसा देख ग्रामीणों और राहगीरों की सूचना पर मौके पर पुलिस पहुंची और घायल को जिला अस्पताल पहुंचाने के बाद परिजनों को घटना की जानकारी दी। उधर, घटना के बाद मौका मिलते ही ट्रक चालक वाहन समेत मौके से फरार हो गया। थाना प्रभारी तेज बहादुर सिंह ने बताया कि सड़क हादसे में दो युवकों की मौत हुई है। हादसे में घायल एक युवक को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शवों को पोस्टमार्टम भेजकर वाहन की तलाश की जा रही है।

मंत्री नन्दी ने निर्माणाधीन गंगा एक्सप्रेसवे का किया स्थलीय निरीक्षण

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी ने शनिवार को प्रयागराज से मेरठ के बीच निर्माणाधीन गंगा एक्सप्रेसवे का कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया। उन्होंने गंगा एक्सप्रेसवे के निर्माण की प्रगति के साथ ही कार्यों के गुणवत्ता की भी जांच की।

एससी-एसटी आरक्षण पर केंद्र सरकार को संविधान संशोधन विधेयक लाना चाहिए-मायावती

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने शनिवार को लखनऊ स्थित पार्टी कार्यालय में प्रेसवार्ता कर एससी—एसटी वर्ग के आरक्षण में क्रीमीलेयर लागू करने के सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को लेकर भाजपा-कांग्रेस व सपा पर निशाना साधा। मायावती ने कहा कि सांसदों को प्रधानमंत्री द्वारा दिए गये आश्वासन से काम चलने वाला नहीं है। संसद का सत्र खत्म हुआ लेकिन विधेयक नहीं आया। आरक्षण को निष्प्रभावी किया जा रहा है। केंद्र सरकार को सुप्रीम कोर्ट के फैसले को लेकर संसद में बिल लाना चाहिए था। बिना विधेयक लाए संसद सत्र खत्म किया है। ऐसे में यह लगता है कि भाजपा और कांग्रेस आरक्षण के खिलाफ है। संशोधन लाकर कोर्ट का फैसला पलटा जाए।

मायावती ने कहा कि प्रधानमंत्री का यह हवा हवाई आश्वासन देना कि सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय को नहीं लागू किया जाएगा और फिर इस मामले में कोई भी कदम न उठाना। कार्रवाई आदि न करना यह स्पष्ट करता है कि या तो प्रधानमंत्री ने इस तरह का कोई आश्वासन एससी—एसटी वर्गों के सांसदों को दिया ही नहीं । और या फिर ऐसा आश्वासन केवल इन वर्गों के लोगों को भ्रमित व गुमराह करने के लिए दिया गया है। इन सब कारणों से आज देश में एससी—एसटी वर्गों के रह रहे लगभग 40 करोड़ रुपये से ज्यादा लोग पूर्व में कांग्रेस की रही सरकार की तरह, वर्तमान भाजपा की केंद्र सरकार के द्वारा भी अपने आपको काफी ठगा सा महसूस कर रहे है। ये लोग आज भी सामाजिक एवं आर्थिक तौर से पिछड़े हुए है,जिन्हें यह आरक्षण दिलाने का कार्य बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर द्वारा कांग्रेस के विरोध के बावजूद अपने अथक प्रयासों से दिलाया गया है। जबकि केंद्र की सरकारों ने इस आरक्षण को खत्म करने के लिए समय—समय पर लगातार कोशिश किए है। जैसे सरकारी नौकरियों को खत्म करके ठेकेदारी प्रथा के माध्यम से कार्य कराना,जिनमे उनके द्वारा नियुक्त कर्मचारियों पर कोई आरक्षण लागू नहीं होता।मायावती ने कहा सरकारी संस्थानों को निजी हाथो में बेचकर उनमें मिल रही लाखों की संख्या नौकरियां, जिसमें इन वर्गों के भी आरक्षण उपलब्ध था वो भी खत्म कर देना। इसी प्रकार भाजपा की सरकार ने अपने वकील, अटार्नी जनरल के माध्यम से से सुप्रीम कोर्ट में उपवर्गीकरण और क्रीमी लेयर के पक्ष में गलत दलीले दिलवायी थी, जिसकी वजह से ही नागराज के निर्णय की ही तरह दविंदर सिंह बनाम पंजाब राज्य के केस में भी सुप्रीम कोर्ट द्वारा एक अगस्त को आरक्षण के विरूद्ध निर्णय दिया गया, जिसका सीधा असर यह होने लगा है कि अब सम्पूर्ण एससी—एसटी वर्गों के आरक्षण प्राप्त नहीं हो सकेगा। इस निर्णय के अंदर ऐसी व्यवस्था कर दी गई है कि अब पूरे देश में राज्य सरकारे अपने—अपने राजनैतिक फायदे के हिसाब से इन वर्गों को आपस में ही लड़वाने का काम करेगी। जीवन भर कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाने के लिए मजबूर कर देगी और अंत में इनके आरक्षित पद खाली पड़े रहने के कारण यह खत्म कर दिए जाएंगे अन्यथ इन्हें सामान्य वर्गों को ही दे दिया जाएगा।

बिरनो पावर हाउस पर लोगों का प्रदर्शन

टाइम्स एण्ड स्पेस

उत्तर प्रदेश जनपद गाजीपुरद्य पूरे भारत में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी थी, बिजली, पानी, भ्रष्टाचार, महंगाई समाप्त करने के लिए और लोगों ने दिल खोलकर नई सरकार बनाने में बढ़ चढ़कर हिसा लिया थाद्य लेकिन अब जनता को राहत नहीं मिलने के कारण हर मुद्दे पर अपनी आवाज बुलंद कर रही है गाजीपुर के बिजली विभाग के पॉवर हाउस बिरनो पर बरही गांव के ग्रामीणों ने एक अनूठे और तीव्र प्रदर्शन का किया। उन्होंने बिजली विभाग के अधिकारियों की लापरवाही और हीलाहवाली के खिलाफ विरोध जताते हुए प्रतिकात्मक शव रखकर प्रदर्शन किया। ग्रामीणों का कहना है कि बिजली सप्लाई में लगातार पांच दिनों से आ रही समस्याओं खुटी खराब होना, तेल इत्यादि और विभागीय अधिकारियों की उपेक्षा से उनकी स्थिति गंभीर हो गई है। वे लंबे समय से बिजली की अनियमित आपूर्ति और खराब मरम्मत सेवाओं से जूझ रहे हैं, जिसका सीधा असर उनके दैनिक जीवन पर पड़ा है। प्रदर्शनकारियों ने आरोप लगाया कि जेई और एसडीओ ने उनकी शिकायतों और समस्याओं की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, जिससे उनका गुस्सा बढ़ गया। उन्होंने बिजली विभाग से तत्काल सुधार की मांग की और चेतावनी दी कि अगर उनकी समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो वे और भी उग्र प्रदर्शन करेंगे। इस प्रदर्शन के बाद, स्थानीय जेई ने आश्वासन दिया है कि वे इस मुद्दे की गंभीरता को समझते हैं और जल्दी ही समस्याओं का समाधान करेंगे। ग्रामीण अब देखना चाहते हैं कि क्या उनकी मांगों को पूरी तरह से माना जाएगा और वे जल्द राहत की उम्मीद कर रहे हैं। प्रदर्शन कर्ताओं में राजकुमार मौर्य, संतोष साहू, दीपू गोंड, हंसराज जायसवाल, मनीष जायसवाल, शर्मा गोंड,विजय जायसवाल और गोपी जायसवाल आदि लोग रहे।

फाइलेरिया से बचाव के लिए 46 लाख लोगों को दवा खिलायेगी टीम

गोरखपुर। शहर के महापौर डॉ मंगलेश श्रीवास्तव ने जिला अस्पताल परिसर में बने बूथ पर फाइलेरिया से बचाव की दवा का सेवन कर शनिवार को सर्वजन दवा सेवन (एमडीए) अभियान का शुभारंभ किया। यह अभियान दो सितम्बर तक चलेगा। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ आशुतोष कुमार दूबे ने महापौर को दवा का सेवन कराया। उन्होंने बताया कि सोमवार से सप्ताह में चार दिन बचाव की दवा खिलाने के लिए स्वास्थ्य विभाग की टीम घर घर जाएंगी। विभाग की टीम के सामने ही दवा का सेवन करना है। इस मौके पर सभी लोगों ने फाइलेरिया उन्मूलन की शपथ ली और जनजागरूकता वाहन को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया गया।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ आशुतोष कुमार दूबे ने बताया कि जिले में 4133 टीम द्वारा करीब 46 लाख लोगों को घर घर जाकर दवा खिलाई जाएगी। प्रत्येक सोमवार, मंगलवार, गुरूवार और शुक्रवार को टीम घर घर जाएंगी। टीम में आशा कार्यकर्ता के साथ एक पुरुष सदस्य होंगे। टीम के लोग दवा खिलाने के साथ साथ नये फाइलेरिया रोगियों को भी ढूंढेंगे। इस अभियान में स्वयंसेवी संस्था डब्ल्यूएचओ, पाथ, पीसीआई, सीफार और फाइलेरिया रोगी नेटवर्क भी सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

जिला मलेरिया अधिकारी ने बताया कि फाइलेरिया जिसे आमतौर पर हाथीपांव भी कहते हैं, एक लाइलाज बीमारी है। इस बीमारी से खुद को, परिवार को और समाज को बचाने के लिए दवा का सेवन बेहद जरूरी है। लगातार पांच साल तक साल में एक बार अगर फाइलेरिया से बचाव की दवा का सेवन किया जाए तो इस बीमारी से पूरे समाज को मुक्ति मिल सकती है। वर्ष में एक बार दवा खा लेने के बाद वर्ष भर के अव्यस्क कृमि मर जाते हैं और लगातार पांच साल तक दवा खाई जाती है तो हर साल इन अव्यस्क कृमि का सफाया तो होता ही है, साथ में वयस्क कृमि भी समाप्त हो जाता है। इस तरह से दवा का सेवन करने वाला व्यक्ति फाइलेरिया से बच जाता है। फाइलेरिया के प्रमुख लक्षणों में हाथ, पैर, स्तन व अंडकोष में सूजन हैं। यह लक्षण संक्रमित मच्छर के काटने के पांच से पंद्रह साल बाद प्रकट होते हैं।

उन्होंने बताया कि कुछ लोग इस मिथक के कारण दवा का सेवन नहीं करते हैं कि दवा खुली हुई है और इसकी सुरक्षा में संशय है। ऐसे लोगों को यह संदेश दिया जा रहा है कि दवा विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों के अनुसार प्रमाणित है। इसे तभी खोला जाता है जब लाभार्थी को सेवन करवाना होता है। दवा का कोई भी दुष्प्रभाव नहीं होता है। जिन लोगों के भीतर पहले से माइक्रोफाइलेरी मौजूद होते हैं उन्हें दवा के सेवन के बाद मतली, चक्कर आना, सिरदर्द जैसे लक्षण आते हैं जो कुछ समय बाद स्वत: समाप्त हो जाते हैं।

फ्लोर मिल में लगी आग से लाखों का हुआ

बिंदकी (फतेहपुर,) चौड़गरा मिल एरिया थाना क्षेत्र के ओग् इंडस्ट्रियल एरिया गुधरौली स्थित फ्लोर मिल के गोदाम में शनिवार के सुबह 5-30 अज्ञात कारणों से आज लग और , गोदाम में आग लगे सेपुरी फैक्ट्री में अपरा तफरी का माहौल बन गया। मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की तीन गाड़ियां आज बुझाने का प्रयास किया लेकिन खिड़कियों की वजह से सफल नहीं हो पाए । जेसीबी मशीन द्वारा दीवाल को तोड़कर फायर कर्मियों ने कई घंटे मशक्कत के बाद गोदाम में लगी आग में काबू पाया जा सका। इस घटना से लाखों रुपया नुकसान का आकलन किया जा रहा

ओम थाना क्षेत्र के गुदरौली ग्राम में स्थित एमपी एमएलए फ्लोर मिल के गोदाम में संदीप अवस्था में आग लगागई गोदाम से उठता हुआ धुआं देख करगोदाम से उठता हुआ धुआं देख कर कर्मचारीयों ने आज पर बुझाने का प्रयास किया लेकिन आज नहीं विकराल रूप धारण कर लिया। सूचना पर मौके पर पहुंचे फायर ब्रिगेड की तीन गाड़ियां भी आज बुझाने का असफल प्रयास किया जिसको लेकर जेसीबी द्वारा दीवाल तोड़कर आज बुझाने का काम शुरू किया गया तब तक गोदाम में रखेंप्लास्टिक बोरियातब तक गोदाम में रखे प्लास्टिक बोरियां व कबाड़ सहित ,मैदा की बोरी सब जलकर राख हो गया

आईआईटी कानपुर के साथ मिलकर सीएसजेएमयू में साइबर सिक्योरिटी प्रोगाम लॉन्च

डेढ़ लाख से अधिक छात्र पहले फेज में होंगे लाभान्वित

कानपुर । सी 3 आई हब आईआईटी कानपुर एवं छत्रपति शाहूजी महाराज इनोवेशन फाउंडेशन ने साथ मिलकर स्टूडेंट्स के लिए साइबर सिक्योरिटी प्रोगाम लॉन्च किया है शनिवार को रानी लक्ष्मीबाई प्रेक्षागार छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर में आईआईटी कानपुर के निदेशक प्रोफेसर मनिंद्र अग्रवाल एवं छत्रपति शाहू जी महाराज कानपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर विनय कुमार पाठक ने पहले फेज में इसकी शुरुआत की विश्वविद्यालय के डेढ़ लाख से अधिक छात्र पहले फेज में इससे लाभान्वित होंगे यह कोर्स हिंदी भाषा में तैयार किया गया है आईआईटी कानपुर की तरफ से पहली बार इस तरह का पाठ्यक्रम किसी भी विश्वविद्यालय में साथ मिलकर शुरु किया गया है इस व्यवसायपारक मॉड्यूल के माध्यम से देश में क्रियाशील सभी संस्थाओं में आर्थिक उन्नति का एक ऐसा माहौल सृजित किया जा सकेगा जो सुरक्षित भी हो, सजग हो, समावेशी हो और देश को प्रगति पथ पर पर आगे बढ़ाने में सहायक हो उल्लेखनीय है कि सी 3 आई हब आईआईटी कानपुर संपूर्ण राष्ट्र को साइबर सुरक्षित बनाने एवं स्वयं अपनी एवं समाज तथा राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि को सुरक्षित रखने हेतु स्थापित एक अग्रणी शोध, शिक्षण एवं समन्वय संस्थान है साइबर सुरक्षा के प्रारंभिक तकनीकी एवं व्यावहारिक ज्ञान की शिक्षा द्वारा वृहत स्तर पर विद्यार्थियों को साइबर प्रोफेशनल्स के रूप में तैयार किया जाएगा इसके माध्यम से देश की प्रगति के लिए ऐसे सिपाही तैयार होंगे जो डिजिटलाइज़ेशन कार्यक्रम को सुरक्षित तरीके से लागू कर देश को समृद्ध बनाएंगे आईआईटी कानपुर के माननीय निदेशक प्रोफेसर मनींद्र अग्रवाल ने समग्र समाज को साइबर अपराधों के बढ़ते खतरे, समाज को हो रही हानि एवं निजता के हनन के विषय में भी अवगत कराया। बड़ी संख्या में विद्यार्थियों को एक साथ पढ़ने हेतु प्रेरित करने हेतु उन्होंने सीएसजेएम विश्वविद्यालय के कुलपति एवं प्रबंध तंत्र के प्रति आभार व्यक्त किया सीएसजेएम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर विनय कुमार पाठक ने इस महत्वाकांक्षी योजना के क्रियान्वयन में सहयोग हेतु सभी को साधुवाद किया हिंदी भाषा में कोर्स का पूरा पाठ्यक्रम तैयार करने की अनूठी पहल का स्वागत किया सी3 आई हब आईआईटी कानपुर के कार्यक्रम निदेशक प्रोफेसर संदीप शुक्ला एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉक्टर तनिमा हाजरा ने अपने संबोधन में कोर्स का संपूर्ण विवरण एवं एलएमएस (लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम) के माध्यम से शिक्षण की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। उन्होंने साइबर प्रशिक्षित होने के संपूर्ण लाभ भी क्रमबद्ध रूप से बताए विश्वविद्यालय के निदेशक महाविद्यालय विकास परिषद प्रोफेसर राजेश कुमार द्विवेदी ने महाविद्यालयों के प्रबंधन एवं कार्यक्रम समन्वयक गणों का आह्वान किया कि इस महत्वाकांक्षी परियोजना के लक्ष्य प्राप्त करने हेतु अपना सहयोग पूर्ण मनोयोग से करें प्रति कुलपति प्रोफेसर सुधीर कुमार अवस्थी ने इस दूरगामी पहल के लिए आईआईटी कानपुर एवं विश्वविद्यालय परिवार को सम्मिलित प्रयास कर एक सर्वोपयोगी, सर्वसुलभ एवं न्यूनतम संभव मूल्य पर विश्वस्तरीय प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु बधाई दी और कानपुर के गौरव स्वरूप दोनों ही संस्थाओं को भविष्य में भी मिलकर समाजोपयोगी कार्य करने हेतु अपना संकल्प व्यक्त किया कार्यक्रम में अधिष्ठाता (एकेडमिक) प्रोफेसर बृष्टि मित्रा ने विद्यार्थियों को समग्र रूप से इस प्रशिक्षण का लाभ उठाने हेतु प्रेरित किया और उनसे गंभीरता पूर्वक सभी कक्षाओं में उपस्थित रहने का आग्रह किया

सामूहिक स्तर पर इतनी अधिक संख्या में व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करने के इस अनूठे उपक्रम में सी3 आई हब आईआईटी कानपुर से डॉक्टर आनंद हांडा तथा नेहा श्रीवास्तव उपस्थित रहे विश्वविद्यालय परिवार से विषय प्रवर्तन एवं संचालन अधिष्ठाता डॉक्टर शिल्पा देशपांडे कायस्था द्वारा किया गया सीएसजेएम Innovation Foundation के मुख्य कार्यकारी अधिकारी विवेक मिश्र एवं कंप्यूटर संकाय के अध्यक्ष डॉक्टर आलोक श्रीवास्तव एवं कंप्यूटर एप्लीकेशन के अध्यक्ष डॉक्टर रॉबिंस पोरवाल द्वारा गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया। निदेशक आईआईटी कानपुर एवं कुलपति को विशिष्ट रूप से सम्मानित भी किया गया कुलसचिव डॉक्टर अनिल कुमार यादव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया इस मौके पर अनिल कुमार त्रिपाठी तथा शैलेंद्र यादव, जसवंत कुमार एवं पवन कुमार, सभी अधिष्ठाता गण, अध्यक्ष गण, समन्वय हेतु प्रभारी शिक्षक गण तथा साइबर सुरक्षा कोर्स हेतु महाविद्यालयों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।